साहित्य और सिनेमा की पारस्परिकता

विजय भान आजाद,

शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

मनोरंजन व कला के दो साधनों के रूप में सिनेमा और साहित्य का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मनोरंजन के साधनों के रूप में साहित्य व सिनेमा जनता के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। साहित्य और सिनेमा अभिव्यक्ति के दो सशक्त माध्यम है तथा दोनों कला के ही दो अलग–अलग स्वरूप हैं। साहित्य शब्दों पर आश्रित है तो वहीं सिनेमा दृश्य–श्रव्य माध्यम है। एक साहित्यकार कलम और कागज की सहायता से अपनी कृति का की रचना करता है तो वहीं फिल्म निर्देशक कथा, पटकथा, अभिनय, गायन, नृत्य, संवाद इत्यादि की सहायता से एक फिल्म का निर्माण करता है। जो भी हो साहित्य और सिनेमा जनता के मनोरंजन के दो महत्वपूर्ण साधन है।

यूँ तो आम बोलचाल में साहित्य शब्द का एक विशाल अर्थ है जिसे सीमित सन्दर्भों में समेटना आसान नहीं।जहाँ संस्कृत में इसका अर्थ काव्य के रूप में माना जाता है वहीं आज भी यह अंग्रेजी के शब्द लिटरेचर का पर्याय हैं। इसे परिभाषाओं से समझा जा सकता है। कुछ संस्कृत विद्वानों ने साहित्य की कुछ परिभाषाएं दी हैं

जैसे : **भामह –** ''शब्दार्थौ सहितौ काव्य'' अर्थात ''शब्द और अर्थ का संयोग काव्य है।''

आचार्य विश्वनाथ ''वाक्य रसात्मक काव्यम'' अर्थात ''रसयुक्त वाक्य काव्य है''

कुछ अंग्रेजी विद्वानों द्वारा साहित्य की परिभाषा–

कॉलरिज–''Poetry is the best word in their best order'' अर्थात ''सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम कर्म में कविता होती है''

वर्डसवर्थ– "Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings" अर्थात – कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है।''

कुछ अन्य विद्वानों ने साहित्य को इस प्रकार परिभाषित किया है– साहित्य के संदर्भ में – राजशेखर के कथनानुसार, ''शब्द और अर्थ की यथा योग्य सहयोग वाली विधा साहित्य है''

नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ रविंद्रनाथ टैगोर ने साहित्य की व्याख्या इस प्रकार की है, ''सहित शब्द से साहित्य के मिलने का एक भाव देखा जाता है। वह केवल भाव–भाव का, भाषा–भाषा का, ग्रंथ–ग्रंथ का मिलन नहीं है, बल्कि मनुष्य के साथ मनुष्य का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अत्यंत अतरंग मिलन भी है, जो साहित्य के अतिरिक्त अन्य से संभव नहीं है।

मनुष्य के जीवन में कला का विशेष महत्व है क्योंकि यह मनुष्य की रचनात्मक सोच से सीधी जुड़कर उसके विकास में सहायक होती है मनुष्य द्वारा निरंतर प्रयोगों में रचनात्मकता के चलते चलो धीरे– धीरे परिपक्व होती है और विकास के पथ पर अग्रसर होती हैं मनुष्य से जुड़ी हुई इन्हीं कलाओं में सिनेमा वह शक्तिशाली माध्यम है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मनुष्य को प्रभावित करती रही है। सिनेमा के अंतर्गत किसी कथा या किसी विषय वस्तु को पर्दे पर दर्शाया जाता है जो नृत्य, संगीत, साहित्य, गायन, वादन

इत्यादि का मिला–जुला रूप है। इन सभी कलाओं का उचित सँयोग ही सिनेमा के रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत होता है।

सिनेमा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम है इसमें कोई दो राय नहीं कि सिनेमा धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी प्रकार की परिस्थितियों को आत्मसात करते हुए रचनात्मक माध्यम बना है। कला, विज्ञान और वाणिज्य का त्रिवेणी संगम सिनेमा के माध्यम से दिखाई पड़ता है। सिनेमा को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे कि फिल्म या चलचित्र आदि।

सिनेमा का स्वरूप स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों लेखकों सिनेमा के जानकारों सिनेमा की कुछ परिभाषाएं प्रस्तुत की हैं।

विजय शर्मा के अनुसार ''फिल्म साहित्य से अलग एक भिन्न विधा है यहां कथानक होता है मगर वही सब कुछ नहीं होता है फिल्म भिन्न मुहावरों में बात करती है।'' आलोक पांडे के कथनानुसार – ''दरअसल सिनेमा सिर्फ अभिव्यक्ति नहीं है वह अन्वेषणकारी माध्यम भी है वह बहुत कुछ ऐसा भी कहता और करता है जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता''

प्रसिद्ध संवाद लेखक राही मासूम रजा सिनेमा को एक विधा के रूप में देखते हैं और कहते हैं कि ''सिनेमा साहित्य की एक विधा है वह लोगों को सुख प्रदान करता है तथा इस सुख से वह समाज को स्वस्थ बनाने की लड़ाई में लड़ता है।जो जो फिल्म इस कर्तव्य को पूरा नहीं करती त्रुटिपूर्ण है'' अर्थात सिनेमा द्वारा समाज की बुराइयों को उजागर करके उनको समाप्त करने का संदेश दिया जाता है, इसी में सिनेमा की पूर्णता निहित है।

किसी भी कला का शुरुआती दौर विभिन्न परिस्थितियों से होकर गुजरता है। उसी प्रकार सिनेमा ने भी अपनी वर्तमान स्थिति तक पहुंचने में एक लंबा सफर तय किया है। सिनेमा का उद्‌भव फ्रांस की देन है। सन 1850 में फ्रांस के एक वैज्ञानिक गैसपार्ड फेलिक्स–टारनाकान उर्फ नादर ने उन दिनों प्रकाशित कथा, लेख, व्यंग्य इत्यादि के भावों को छाया चित्रों द्वारा उजागर करने का कार्य किया।

रेखाचित्र–छायाचित्र की सहायता से उन्होंने अपने स्थिर छायाचित्र कैमरे के माध्यम से क्रम अनुसार छायाचित्र लिए और उनको मंच पर प्रदर्शित किया। कथावाचक के रूप में किसी की आवाज की सहायता ली और उन कथा व चित्रों के बीच तालमेल बिठाकर दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

वहीं फ्रांस के एक अन्य छाया पेरे–जूल्स सीजर जॉनसन ने सन 1873 में 'फोटोग्राफिक राइफल्स' नामक कैमरा का निर्माण किया और यह सफर फिर थमा नहीं। एलिस गे ने 1896 में दुनिया के प्रथम लघु कथा का निर्माण कर प्रथम महिला फिल्मकार बनने का गौरव प्राप्त किया। इस तरह अनेक प्रयासों व प्रयोगों द्वारा सिनेमा का स्वरूप दिन–ब–दिन उभरता रहा और सिनेमा यूरोप और अमेरिका तक पहुंचा और फिर 7 जुलाई 1896 को भारत सिनेमा से परिचित हुआ।

भारतीय सिनेमा की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' (मूक) का निर्माण 3 मई सन 1913 को हुआ। उसके बाद सन 1931 में हिंदी भाषी फिल्म 'आलम आरा' (सवाक) में बनाई गई। फिर यह सफर आगे चल पड़ा।

सिनेमा को कहानी की जरूरत थी और यह जरूरत साहित्य द्वारा पूरी हुई। दादा साहब फाल्के द्वारा बनाई गई पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' एक धार्मिक कथा पर आधारित थी। उसके बाद अयोध्या का राजा भक्त प्रहलाद इत्यादि फिल्में पौराणिक धार्मिक ग्रंथों का रूपांतरण था। शुरुआती दौर में पौराणिक व धार्मिक कथाओं पर फिल्में बनने लगी और उसके

बाद सिनेमा ने सामाजिक, राजनीतिक, वीरतापूर्ण विषय पर फिल्में बनाई जो आम जनता के हृदय को लुभाने लगी।

सिनेमा ने हिंदू धर्म ग्रंथों, महाकाव्यों,ऐतिहासिक ग्रंथों तथा देश प्रेम इत्यादि को केंद्र में रखकर फिल्मों की कथा का चयन किया और उन पर फिल्में बनाई। धीरे–धीरे विषय के चयन में बदलाव आने लगे और फिल्मकारों ने बड़े बड़े लेखकों और उनकी रचनाओं की कथाओं को केंद्र में रखकर फिल्में बनाना शुरू किया। प्रेमचंद्र, भगवतीचरण वर्मा, वृंदावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर, रविंद्रनाथ टैगोर, रामवृक्ष बेनीपुरी, सुरेंद्र वर्मा, चेतन भगत आदि साहित्यकारों ने भी समय–समय पर हिंदी साहित्य में किसी न किसी रूप में अपनी स्थिति दर्ज करायी। मुंशी प्रेमचंद के कथा साहित्य पर अभी तक सबसे अधिक फिल्में व धारावाहिक बन चुके हैं। मुंशी प्रेमचंद कथा साहित्य में जो आमजन की समस्याएं और संदेश प्रस्तुत हैं उन्हें आम जन तक पहुंचाने का कार्य सिनेमा द्वारा उचित ढंग से किया गया है।

साहित्य पर आधारित फिल्मों का फलक अत्यंत विशाल है। हिंदी सिनेमा की बात करें तो बांग्ला साहित्य के उपन्यासकार शरदचंद्र चटर्जी के 'देवदास' नामक उपन्यास पर हिंदी सिनेमा में चार बार फिल्में बन चुकी हैं। जिसमें सन 2002 में संजय लीला भंसाली द्वारा बनायी गई फिल्म 'देवदास' सर्वाधिक कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बनी। भगवती चरण वर्मा द्वारा लिखे प्रसिद्ध उपन्यास 'चित्रलेखा' का भी दो बार फिल्मांकन हो चुका है जिसे लोगों ने खूब पसंद किया है। धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास पर भी इसी नाम से फिल्म बनाई जा चुकी है।

राजेंद्र यादव के 'सारा आकाश' पर 'सेल्यूलाइट' नाम से फिल्म बनाई गई। वहीं मुक्तिबोध की लंबी कविता 'अंधेरे में' और 'सतह से उठता आदमी' पर मणिकौल ने फिल्म बनाई।उसी प्रकार निर्मल वर्मा की कहानी 'माया दर्पण', मोहन राकेश की 'उसकी रोटी', 'आषाढ़ का एक दिन', मनु भंडारी की 'यही सच है' कहानी पर 'रजनीगंधा' नाम से फिल्म बनाई गई। यह फिल्म हिंदी सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुई। वही विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'नौकर की कमीज' पर फिल्म बनाई गई। समकालीन लेखक चेतन भगत के उपन्यासों पर भी कई फिल्में बन चुकी हैं जिसमें 'फाइव प्वाइंट समवन' पर 'थ्री इडियट' (2009) नाम से फिल्म का निर्माण किया गया। वहीं हाफ गर्लफ्रेंड, थ्री मिस्टेक ऑफ माय लाइफ, टू स्टेट्स, वन नाइट एट कॉल सेंटर, उपन्यासों पर भी फिल्म बन चुकी हैं। ये फिल्में युवाओं को खूब पसंद आईं।साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनने का दौर जब से आरंभ हुआ उसके बाद रुका ही नहीं यह सफर लगातार चलता रहा है।

जहाँ मलिक मोहम्मद जायसी की प्रसिद्ध रचना पद्मावत पर संजय लीला भंसाली द्वारा 'पद्मावती' नामक फिल्म बनाई गई जो चर्चा व विवाद का विषय रही है वही पिछले वर्ष निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी द्वारा काशीनाथ सिंह के प्रसिद्ध उपन्यास 'काशी का अस्सी' पर 'मोहल्ला अस्सी' नाम से फिल्म बनाई गई जो व्यंग्यात्मक कॉमेडी फिल्म है। इसमें तीर्थयात्रा के शहर में हो रहे व्यवसायीकरण पर व्यंग्य किया गया है।

जब से सिनेमा का भारत में आगमन हुआ है तब से सिनेमा और साहित्य का संबंध लगातार बना रहा है शुरुआत में पौराणिक व धार्मिक कथाओं को आधार बनाकर फिल्मों का निर्माण किया गया उसके बाद सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक इत्यादि विषयों पर फिल्में आने लगी। समाज की मांग की पूर्ति के लिए साहित्यिक कृ तियों की ओर निर्माता और निर्देशकों का ध्यान गया तो बड़े–बड़े प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं का चयन सिनेमा जगत द्वारा फिल्में

बनाने के लिए किया जाने लगा। कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय, बंकिम चंद्र चटर्जी, उदय प्रकाश, अमृता प्रीतम, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, मनु भंडारी, उदय प्रकाश, मोहन राकेश, काशीनाथ सिंह, चेतन भगत आदि की कृतियों पर फिल्में बनाई जाने लगी साहित्य और सिनेमा एक दूसरे से संबंधित हैं समाज में घटने वाली सभी नकारात्मक व सकारात्मक घटनाओं का सीधा प्रभाव सिनेमा और साहित्य आवश्यक पड़ता है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि मनुष्य के आंतरिक क्षेत्रों में गहनता से प्रवेश कर चुके हैं। साहित्य और सिनेमा मनुष्य को सही दिशा देने संस्कारित करने उन्नत करने और मनुष्य का सर्वांगीण विकास करने के लिए आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची'

1. डॉ. वामापुराव देसाईः लोक साहित्य, विनय प्रकाशन, पशुपति नगर, नौवस्ता, कानपुर, प्रथम संस्करण 1996, पृष्ठ संख्या–09
2. सिनेमा में शेक्सपियर–फ्लोर से ओंकारा तक–विजय शर्मा ('हंस' हिंदी सिनेमा के सौ साल, फरवरी 2013) पृष्ठ संख्या–134
3. समाज में सिनेमा – आलोक पांडेय (मीडिया विमर्श, सिनेमा, विशेषांक 1 दिसंबर 2012) पृष्ठ संख्या –02
4. राही मासूम रजा– सिनेमा और संस्कृति पृष्ठ संख्या– 23
5. डॉ. देवेंद्रनाथ सिंहः भारतीय हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा– एक मूल्यांकन , पृष्ठ संख्या–197
6. डॉ. भगीरथ मिश्र –काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन
7. डॉ शशि शर्मा– पटकथा लेखन